सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीकी समष्टि साधना एवं आध्यात्मिक अधिकार

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाकी उद्घोषणा करनेवाले

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

सह-संकलनकर्ता

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

मई २०२३ तक सनातनके ३६२ ग्रन्थोंकी हिन्दी, मराठी, अंग्रेजी, गुजराती, कन्नड, तमिल, तेलुगु, मलयालम, बांग्ला, ओडिया, पंजाबी, असमिया, सर्बियन, जर्मन, नेपाली, स्पैनिश, फ्रांसीसी, इन १७ भाषाओंमें ९३ लाख ६१ सहस्र प्रतियां !

डॉ. जयंत आठवलेजीके गुरु प.पू. भक्तराज महाराजजीका संक्षिप्त परिचय

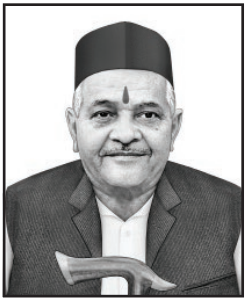

प.पू. भक्तराज महाराजजी (प.पू. बाबा) का जन्म ७.७.१९२० को मनासा, मध्य प्रदेश में हुआ । उनका पहलेका नाम श्री. दिनकर सखाराम कसरेकर था । प.पू. बाबाको ९.२.१९५६ को उनके गुरु प.पू. श्री अनंतानंद साईशजीके प्रथम दर्शन हुए । १५.२.१९५६ को प.पू. बाबाको गुरुमन्त्र मिला । १६.२.१९५६ को श्री गुरुने प.पू. बाबाका 'भक्तराज' ऐसे नामकरण किया ।

आदि शंकराचार्यने पूरे भारतमें ४ मठोंकी स्थापना की है । आदि शंकराचार्यजीद्वारा स्थापित चार मठोंमें से बद्रीनाथ मठके अन्तर्गत आनेवाला 'आनन्द सम्प्रदाय' उन्होंने तोटकाचार्यको सौंपा था । प.पू. भक्तराज महाराजजी के गुरु प.पू. श्री अनंतानंद साईशजी इसी परम्पराके थे ।

प.पू. बाबाने अनेक भजन लिखे । शिष्यावस्थामें 'भजन' प.पू. बाबाकी साधना एवं सेवा थी । गुरुपदपर आरूढ होनेपर 'भजन' प.पू. बाबाका शिष्योंको उपदेश करनेका तथा चैतन्यसे एकरूप होकर मार्गदर्शन करनेका एक माध्यम बन गया । 'शिष्योंकी आध्यात्मिक प्रगति करानी हो, तो गुरु-शिष्य सम्पर्क अधिकाधिक होना चाहिए', इस उद्देश्यसे प.पू. बाबाने लाखों किलोमीटर 'भ्रमण' किया । 'अन्नदान' एक श्रेष्ठ दान होनेके कारण प.पू. बाबाने सहस्रों 'भण्डारे' किए । 'भजन', 'भ्रमण' एवं 'भण्डारा' को ही अपना सर्वस्व माननेवाले प.पू. बाबाने १७ नवम्बर १९९५ को देहत्याग किया ।

(प.पू. भक्तराज महाराजजीके विषयमें अधिक जानकारी हेतु पढें : सनातनकी मराठी भाषामें ग्रन्थमाला 'प.पू. भक्तराज महाराजजीका चरित्र [कुल ५ खण्ड]' तथा 'प.पू. भक्तराज महाराजजीकी शिक्षा [कुल ३ खण्ड]')

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजीका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका समग्र परिचय सनातनके ग्रन्थ 'सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीकी साधनायात्रा : खण्ड १'में तथा सनातनके जालस्थल 'www.Sanatan.org' पर दिया है । आगे उनके विशेषतापूर्ण आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय दिया है ।

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका आध्यात्मिक शोधकार्य

१. 'ईश्वरप्राप्ति हेतु कला'के विषयमें मार्गदर्शन तथा संगीत, नृत्य इत्यादि कलाओंके सात्त्विक प्रस्तुतीकरण करनेसम्बन्धी शोध

२. अनिष्ट शक्तियोंके सन्दर्भमें शोध एवं शारीरिक, मानसिक तथा अनिष्ट शक्ति-जनित पीडाकी उपचार-पद्धतियोंके विषयमें शोध

३. अपनी (सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीकी) देह तथा उपयोगकी वस्तुओं में हो रहे दैवी परिवर्तनों सम्बन्धी शोधकार्य और अपने महामृत्युयोगका शोधकार्यकी दृष्टिसे अध्ययन

४. हिन्दुओंके धार्मिक कृत्य तथा सूक्ष्म पंचमहाभूतोंके कारण होनेवाली बुद्धिअगम्य घटनाओंका आधुनिक वैज्ञानिक उपकरण (उदा. 'यूनिवर्सल थर्मो स्कैनर') एवं प्रणाली (उदा. 'पॉलीकॉन्ट्रास्ट इंटरफेरन्स फोटोग्राफी') द्वारा शोध

५. २०.११.२०२२ तक २ बालक-सन्तोंको, तथा ६० प्रतिशतसे अधिक आध्यात्मिक स्तर प्राप्त २४३ और अन्य ९१३ दैवी बालकोंको समाजसे परिचित करवाया । दैवी बालकोंके विषयमें शोध-कार्य भी जारी है ।

६. स्वभाषारक्षा हेतु दिशादर्शन, भाषाकी सूक्ष्म अभिव्यक्तियोंके विषयमें शोध तथा भाषाकी विशेषताओंका संग्रह

७. प्राणि एवं वनस्पतियों का सात्त्विकताकी दृष्टिसे अध्ययन

८. ज्योतिषशास्त्र (फलज्योतिष, हस्तसामुद्रिक एवं पादसामुद्रिक शास्त्र) तथा नाडीभविष्य (नाडीपट्टिकाओंपर लिखा भविष्य) की सहायतासे विविधांगी शोध-कार्य

ग्रन्थकी अनुक्रमणिका

(अध्यायोंमें से विशेषतापूर्ण शीर्षक नीचे दिए गए हैं ।)

अध्याय १. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीकी व्यष्टि व समष्टि साधना १३

१ ई. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीकी साधनाकी कुछ विशेषताएं २५

१ उ. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीको स्वयंकी साधनाके सम्बन्धमें ध्यानावस्थामें मिले उत्तर २६

१ ए. परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीका वर्ष अनुसार आध्यात्मिक स्तर ५६

१ ओ. 'परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके माध्यमसे ईश्वरीय संकल्प कैसे कार्य करता है ?', यह दर्शानेवाला सूक्ष्म ज्ञानसे सम्बन्धित चित्र ५८

अध्याय २. डॉ. आठवलेजीकी आध्यात्मिक उन्नति ६२

२ अ. गुरुप्राप्तिके केवल ६ मास उपरान्त डॉ. आठवलेजीका अखण्ड नामजप आरम्भ होना ६२

२ इ. डॉ. आठवलेजी कालके बन्धनके परे जाना ६२

२ उ. गुरुका डॉ. आठवलेजीको सगुणसे निर्गुणकी ओर ले जाना ६३

२ ओ. डॉ. आठवलेजीकी आध्यात्मिक उन्नतिके सन्दर्भमें अन्योंको प्रतीत हुए सूत्र ६५

२ औ. डॉ. आठवलेजीकी आध्यात्मिक अवस्थाओंके सम्बन्धमें प्राप्त ईश्वरीय ज्ञान ! ६६

अध्याय ३. गुरुद्वारा डॉ. आठवलेजीके आध्यात्मिक अधिकारके विषयमें व्यक्त किए उद्‌गार ! ७३

३ आ. गुरुद्वारा डॉ. आठवलेजीके आध्यात्मिक अधिकारके सन्दर्भम भक्तोंको दी अनुभूतियां ७८

३ इ. डॉ. आठवलेजीद्वारा तैयार किए साधकोंके विषयमें गुरुके गौरवोद्‌गार ! ७९

अध्याय ४. गुरुके डॉ. आठवलेजीको आशीर्वाद (साकार होनेके उदाहरण सहित) ! ८०

४ अ. वर्ष १९८८ और १९९३ – 'लोग इनकी (डॉ. आठवलेजी की) पूजा करेंगे !' ८०

४ आ. वर्ष १९९० – 'तू किताबोंके ऊपर किताबें लिखेगा ।' ८३

४ इ. वर्ष १९९२ से १९९५ – 'अध्यात्मप्रसार कीजिए !' ८४

४ ई. वर्ष १९९३ – 'डॉक्टर, आपने हमें तन-मन-धन दिया, हमने आपको ज्ञान, भक्ति और वैराग्य दिया !' ८६

४ उ. वर्ष १९९४ – 'आगे आपके (डॉ. आठवलेजीके) सहस्रों शिष्य होंगे !' ८७

४ ऊ १. 'गोवामें अपना कार्यालय होगा !' ८७

४ ऊ २. 'आपका लेखन अपनेआप होगा !' ८७

अध्याय ५. डॉ. आठवलेजीके विषयमें सन्त, महर्षि एवं देवताओं के गौरवपूर्ण वचन ! ९०

५ इ. श्री देव हालसिद्धनाथद्वारा 'भाकणूक' (गूढ भविष्यकथन) द्वारा परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजीके विषयमें व्यक्त उद्‌गार ! ९९

अध्याय ६. डॉ. आठवलेजीको हुई विशेष अनुभूतियां १०१

६ आ. गुरुसे शक्ति मिलनेपर डॉ. आठवलेजीको अनुभूत आध्यात्मिक अवस्था १०१

६ ओ. डॉ. आठवलेजीको ब्रह्मानन्दकी अनुभूति होना १०५

६ औ. डॉ. आठवलेजीको नींदमें भी निर्विचार अवस्था और आनन्दावस्थाकी अनुभूति होना १०६

ग्रन्थकी भूमिका

'गुरु पारस को अन्तरो, जानत हैं सब संत । वह लोहा कंचन करे, ये करि लेय महंत ।। गुरु और पारस के अन्तरको सभी ज्ञानी पुरुष जानते हैं । पारस मणिके स्पर्शसे लोहा सोना बन जाता है; परन्तु गुरु इतने महान हैं कि शिष्यको अपने जैसा महान बना लेते हैं । श्री गुरुकी महिमाका वर्णन इस प्रकार किया गया है । प.पू. भक्तराज महाराजजीने डॉ. जयंत आठवलेजीको 'शिष्य'के रूपमें स्वीकार करनेके उपरान्त अल्पावधिमें उन्हें 'अपने समान' बनाया ! केवल ३ वर्षोंमें ही गुरु सबके सामने डॉ. आठवलेजीके आध्यात्मिक अधिकार को मान्यता देने लगे । ये अधिकार तथा गुरु और अन्य कुछ सन्तोंके डॉ. आठवलेजीसे सम्बन्धित गौरवोद्‌गार भी प्रस्तुत ग्रन्थमें दिए हैं । कुछ अन्य पन्थीय सन्तोंने भी डॉ. जयंत आठवलेजीका आध्यात्मिक सामर्थ्य पहचानकर उनकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है, यह भी विशेष है ! इससे डॉ. आठवलेजीके असामान्य आध्यात्मिक विभूतिमत्वका परिचय होता है ।

वर्तमानमें साधक आपातकालकी आंच सहते हुए भी सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीके प्रति श्रद्धा रखते हुए हिन्दू राष्ट्रकी स्थापनाके लिए कार्यरत हैं । प्रस्तुत ग्रन्थके कारण साधकोंकी सच्चिदानंद परब्रह्म डॉक्टरजीके प्रति श्रद्धा और भावभक्तिमें वृद्धि होगी । इसलिए आगामी भीषण आपातकालमें कितने भी महाभयंकर संकट आएं, तब भी साधकोंके अन्तःकरणमें बार-बार यही शब्द उभरते रहेंगे, 'अरे, घबराते क्यों हो ? प.पू. डॉक्टरजी हैं न !' इसीलिए इस ग्रन्थमें ये सर्व आशीर्वाद और गौरवोद्‌गार हमने समाविष्ट किए हैं । 'यह सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीके व्यक्तित्वको बढावा देने तथा व्यावसायिक उद्देश्य सामने रखकर उनकी महिमा बढानेका प्रयास है', इस हीन भावनासे इसकी ओर कोई न देखें ।

गुरुके आशीर्वाद ही शिष्यका सामर्थ्य और कीर्ति बढाते हैं । गुरुके

आशीर्वादके कारण आज भी सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी अखिल मानवजातिके उद्धारके लिए धर्मसंस्थापना अर्थात हिन्दू राष्ट्र-स्थापना का दिव्य कार्य कर रहे हैं । इतना ही नहीं, यह कार्य करनेवाले सहस्रों साधक भी वे तैयार कर रहे हैं ! यह उनकी अद्वितीय विशेषता है । शिष्य को गुरुके आशीर्वाद प्राप्त हों, इसलिए शिष्यकी साधना भी वैसी ही अतुलनीय होनी चाहिए । गुरुके प्रति सम्पूर्ण समर्पित भाव, गुरुकार्यके प्रति असीमित लगन, समष्टि कल्याणका व्यापक विचार आदि गुणोंका समुच्चय शिष्यमें होना चाहिए । सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीमें ये गुण होनेके कारण उन्हें गुरुके आशीर्वाद प्राप्त हुए और फलित भी हुए ! इससे स्पष्ट होता है कि सच्चिदानंद परब्रह्म डॉक्टरजीकी साधना कितनी उच्च श्रेणीकी थी । उनकी व्यष्टि और समष्टि साधनाका संक्षिप्त सारांश भी इस ग्रन्थमें प्रस्तुत किया है ।

अभीतक अनेक सन्त-महात्मा हुए हैं । साधक अवस्थासे ब्रह्मपदकी प्राप्तितककी उनकी साधना यात्रामें उनकी आन्तरिक अवस्थामें हुए परिवर्तन, उनकी आध्यात्मिक उन्नतिका मूल्यांकन आदि अन्योंको ज्ञात नहीं हो पाया । सन्त अहंरहित होते हैं, इसलिए वे स्वयं यह सर्व नहीं बताते । सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीने सभी साधक सीख पाएं, इस उद्देश्य से 'स्वयंकी उन्नतिका मूल्यांकन करना सम्भव हो', ऐसे सूत्र उनकी साधकावस्थासे लिखकर रखे हैं तथा इस सन्दर्भमें उन्होंने आगे सनातनके ज्ञान-प्राप्तकर्ता साधकोंसे भी समझ लिया है । यह सर्व अमूल्य जानकारी भी इस ग्रन्थमें अन्तर्भूत है । यह इस ग्रन्थका निरालापन है ।

वर्ष १९९० से गुरु विविध प्रकारसे सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजी का आध्यात्मिक अधिकार सबके ध्यानमें ला रहे थे । तबसे आजतक सच्चिदानंद परब्रह्म डॉक्टरजी स्वयंको गुरुका शिष्य ही मानते हैं और शिष्यभावमें ही सनातनके आश्रममें रहते हैं ! यह भी उनकी एक विशेषता है । ऐसे अत्युच्च कोटिके सन्तके मागदर्शनमें साधना करनेका भाग्य

मिलनेके लिए अनेक जन्मोंका पुण्य होना चाहिए । हम सभीका यह सौभाग्य है । सच्चिदानंद परब्रह्म डॉक्टरजीका जन्म मानो केवल साधकों के उद्धारके लिए ही हुआ है । उनके समान गुरु आज सम्पूर्ण पृथ्वीपर ढूंढने पर भी नहीं मिलेंगे । आजतक साधकोंपर आए सर्व संकटोंके समय उन्होंने ही साधकोंको सर्व प्रकारसे सम्भाला है । 'गुरु ही ईश्वर हैं । गुरुके लिए ही मेरा जन्म है', ऐसा भाव साधक रखें तथा उनके मार्गदर्शनानुसार साधना करें, तो घोर आपातकालमें भी साधकोंकी रक्षा तो होगी ही, साथ ही साधक मोक्षप्राप्ति भी करेंगे । इस ग्रन्थके माध्यमसे सभीको ऐसी लगनपूर्वक साधना करनेकी बुद्धि और प्रेरणा मिले, यह श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है ।' – **(पू.) संदीप आळशी** (१२.११.२०२२)

(ग्रन्थमाला 'सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजीका चरित्र' और उपमाला 'सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत आठवलेजीकी साधनायात्रा' का अधिक परिचय 'साधनायात्रा : खण्ड १' में दिया है ।)

'डॉ. आठवलेजीकी साधनायात्रा' इस ग्रन्थमालाका प्रथम खण्ड !

परात्पर गुरु डॉ. जयंत आठवलेजीकी गुरुसे हुई भेंट एवं उनका गुरुसे सीखना

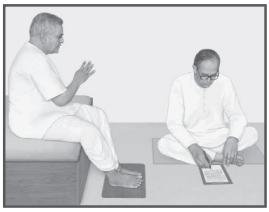

- डॉ. आठवलेजीका साधना हेतु प्रवृत्त होना
- गुरुप्राप्तिसे पूर्व किया अध्यात्मप्रसार
- गुरु महाराजजीद्वारा डॉ. जयंत आठवलेजीको नामसाधना, अहं-निर्मूलन, साक्षिभाव, अद्वैतकी ओर जाना आदि सम्बन्धी सिखाना
- डॉ. आठवलेजीद्वारा अल्पावधिमें ही गुरुचरणोंमें सर्वस्व समर्पित करना